International Journal of Information Movement Vol.2 Issue IV (August 2017)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 46-49

हरियाणवी सिनेमा का इतिहास और वर्तमान स्थितिः एक अध्ययन

डा0 कान्ता देवी
सहायक प्रोफेसर
पूजा कालेज ऑफ ऐजुकेशन,
पिपली कुरूक्षेत्र।

सारांशः

सिनेमा किसी देश व संस्कृति को समझने व समाज को समझाने का महत्वपूर्ण साधन होता है सिनेमा न केवल दर्शकों का भरपूर मनोरजन करता है बल्कि समाज के विभिन्न रूपों की सहायता से भी संचारित करने में भी सक्षम है सिनेमा के शुरूआती दोर में सुप्रिसद्व साहित्यकारों व लेखको की कृति पर आधारित फिल्मों का निर्माण किया गया और फिल्मों के माध्यम से राष्ट्र प्रेम व देश की महिमा का गुणगान प्रदक्षित किया गया। सिनेमा हमारी सस्कृति , राष्ट्र, विचारधाराओं एवं समाज की कल्पना हमारे सामने प्रस्तुत करता है। यह समाज का वह आधार है जहाँ मनुष्य व्यवहार करना सिखता है और सामाजिकरण की और आर्कषित होता है। प्रस्तुत शोध पत्र में हरियाणवी सिनेमा के इतिहास और वर्तमान स्थिति को जानने का प्रयास किया गया है। इसी शोध में अन्तरविश्लेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

मुख्य शब्द :–हरियाणवी, फिल्म, इतिहास, मनोरजन, देश, संस्कृति, साहित्यकार, संचारित, राष्ट्र, व्यवहार, अन्तरविश्लेक्षण, कलाकार, छोरा, सरपंच, पिघला भरथरी, जाटनी, लाडो आदि।

प्रस्तावनाः–

हरियाणवी शब्द हरियाण प्रदेश के निवासियों तथा उनके द्वारा बोली जाने वाली भाषा के लिए प्रयोग किया जाता है। जिसकी उत्पति 'हरियाणा' के साथ 'वी' प्रत्यय जोड़ने से हुई हैं। समय–समय पर विभिन्न विद्वानों ने हरियाणवी को भिन्न–भिन्न नामों से अभिहित किया है। जिनमें बागरू, कौरवी, दक्षिणी हिन्दी, जाटू, खड़ी बोली आदि प्रमुख है। हरियाणा राजनीतिक मानचित्र पर सन् 1966 ई0 को आया। अतः इससे पूर्व इस तरह के नामकरण स्वभाविक है। अलग–अलग लोगों ने इसे भिन्न–भिन्न नामों से अभिहित किया हैं।

हरियाणवी संस्कृतिः–

हरियाणवी संस्कृति की अगर बात की जाए तो हरियाणवी संस्कृति का संबंध ग्रामीण जीवन के साथ जुड़ा हुआ है। हरियाणवी संस्कृति किसी राष्ट्र या समाज के रीति–रिवाज, व्यहार, भाषा, खान–पीन, पहनावा व परम्परा को उजागर करता है। ग्राम्य जीवन शैली व लोगो का जीवन स्तर हरियाणवी संस्कृति विरासत की एक पहचान हैं। रागिनी, सांग, कठपुतली चौपाल हरियाणवी संस्कृति के अन्तर्गत आते हैं।

हरियाणवी पहेलियाँ :–

ग्रमीण जीवन में हरियाणवी पहेलियों के द्वारा आपस में बात करने का प्रचलन है।

- छोटी सी छोटी रामदेई ना चढ़नी चौबारे, पाई–ए ना।
- रघा चाले रघ–रघ, तीन मुंडी दस युग।
- हरी था व भरी थी, राजा जी के बाग में, दुशाला ओडे खड़ी थी।
- एक सींग की गा, घाले उतना ही खा।

साहित्य अवलोकनः–

साहित्य अवलोकन किसी भी शोध कार्य का आवश्यक पहलू हैं। इससे शोधकर्ता तथा शोध के विषय में जानकारी रखनें वालों को उचित जानकारी प्राप्त होती है। साहित्यिक में सम्बंधित सामग्री प्राप्त करता है। पारलिकर कल्पना, मंजरी गांधी ने 2000 में 'वूमैन इमेजिंज इन इंडियन सिनेमा' विषय के अंतर्गत एम. एम. विश्वविद्यालय, बरोदा के गृहविज्ञान विभाग के तृतीय वर्षीय विद्यार्थियों पर अध्ययन किया और पाया कि भारतीय सिनेमा में महिलाओं को मात्र सैक्स का प्रतीक बनाकर दिखाया गया है। महिलाओं की सुंदरता को फिल्मकारों द्वारा व्यावसायिक तौर पर प्रयोग किया जाता है और उन्हें एक उत्पाद के रूप में दर्शकों के सामने परोसा जाता है।

तिवारी शैलेंद्र ने 'सत्यजीत राय का सिनेमा' विषय पर लिखे अपने शोधपत्र में कहा है कि ''फिल्म का यथार्थ थोड़ा सा भिन्न होता है। यहां सत्य के बारे मे जानकारी एक साथ गुच्छों में दी जाती है। किसी एक क्षण में पर्दे पर दिखाई पड़ने वाली आकृतियां अपने साथ बहुत सारी चीजें एक साथ लिए रहती हैं, हर चीज के साथ एक विशेष जानकारी जुड़ी हुई है। दूसरे शब्दों में सिनेमा की भाषा शब्दों की भाषा से ज्यादा विस्तृत होती है।

शोध विधिः–

प्रस्तुत पत्र में अर्न्तवस्तु विश्लेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है यह विधि शोध कि महत्वपूर्ण विधियों में से एक हैं। मीडिया शोध के क्षेत्र में यह विधि काफी प्रयोग होती हैं। इस शोध में हरियाणवी साहित्य एवं फिल्मों के इतिहास को इस विधि द्वारा सामने लाने का प्रयास किया गया है।

हरियाणवी सिनेमा का इतिहास :–

हरियाणवी सिनेमा के इतिहास का प्रारम्भ हरियाणा के अलग राज्य के रूप में आने के लगभग एक दशक बाद प्रारम्भ हुआ। हरियाणवी बोली जहाँ पुरे देश में अपनी एक अलग पहचान रखती हैं। वही कुछ हरियाणवी प्रेमियों ने इस बोली को परदे के माध्यम से आम समाज तक पहुचाने की कोशिश कि और हरियाणवी सिनेमा के उद्भव को लेकर प्रदेश में एक चर्चा प्रारम्भ की। इसे पहले छोटी –छोटी वृतचित्रों द्वारा हरियाणवी बोली में फिल्मों की शुरूआत हो चुकी थी। जिसे लोग काफी पसन्द करते थे। धीरे–धीरे प्रदेश के वृतचित्रों में कार्य करने वाले कलाकारों ने एक सुची बनाई और इसके बाद बैठकों का दोर प्रारम्भ हुआ इस सूची में प्रदेश के 40 फिल्म प्रेमियों के आपसी तालमेल पर उपरोक्त समिति की 1979 में नीवं रखी गयी और इसकी अध्यक्ष प्रख्यात नृत्यांगना श्रीमति ऊषा शर्मा को बनाया गया।

31अक्तुबर 1980 को दिल्ली स्थित हरियाणा भवन में प्रदेश के तत्कालिन मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल ने उपरोक्त समिति की प्रथम फिल्म 'बहुराणी' का मुहूर्त क्लैप दिया। जाने माने साहित्यकार देवी शंकर प्रभाकर की लेखनी स`उपजी इस दर्दीनी–कथा का फिल्मांकन रोहतक व आस–पास के क्षेत्रों में करने का निर्णय लियां 1जु0 1981 को इस फिल्म की शुटिंग प्रारम्भ हुई और हरियाणवी सिनेमा उधोग सूर्य की प्रथम किरण फूटी। हरियाणवी फिल्म इतिहास में यह दर्ज करना आवश्यक होगा कि एक विशिष्ट काय्र प्रयोजन के लिए मिली सरकारी सहायता के साथ ही अनोखा खेल आरम्भ हुआ। फिल्म राजनीति के प्रभाव मे सबसे पहली गाज निर्देशक विरेन्द्र भार्गव पर गिरी। उनकी जगह सत्येन सिंह रावल को इस फिल्म का निर्देशक बना दिया गया। मुहुर्त से पहले ही नायिका ऊषा शर्मा ने सहनायिका बनना गवांरा न किया और शुटिंग के समय सह–नायिका उनकी शिष्या वीणाधीर बनायी गयी। यहीं बस न हुई। मुंबई फिल्मोधोग में वर्षों के अपने संर्घष को याद करते हुए अरविन्द स्वामी एक प्रमुख चरित्र को कमजोर अभिन्य से डूबो बैठे।

ठसके बावजूद करीब साढे तीन लाख रूपये की लागत से बनी 'बहुराणी' दिल्ली हरियाणा व राजस्थान में जोर–शोर से प्रर्दशित हुई और हरियाणा में फिल्म स्टारों का काफिला तैयार हो गया। कमजोर पटकथा, के कैमरामैन से निर्देशक बने सत्येन सिंह रावल के दिग्भ्रमित निर्देशन के होते हुए भी जे0 पी0 कौशिक के मधुर संगीत ने दर्शकों का मन मोह लिया। रजवीर कादयान पर फिल्माया गीत 'भन्नै इब के बदा ले मेरी मांए–बटेऊ आया लेवन

नैं' झाज भी गुनगुनाया जाता है। नायिका सुमित्रा के उम्दा अभिनय व राकेश बेदी की दमदार भूमिका ने फिल्म को औसत सफलता प्रदान करने में महत्पूर्ण योगदान दिया।

'बहुराणी' में हुए अदृश्य अपमान का प्रतिफल थी चन्द्रावल, देवी शंकर प्रभाकर की करथक नृत्यांगना पटनी ऊषा शर्मा ने अर्पायाप्त आर्थिक मदद व तकनीकी सुविधाओं से इस फिल्म को रिकार्ड 18 दिन की शूटिंग में पूरीकर निर्देशन का भार पुत्र जयन्त प्रभाकर ने संभाला ढाई लाख के बजट से बनी इस फिल्मो ने 1984 में ढाई करोड से अधिक का व्यवसाय किया और शुरू हुआ हरियाणवी फिल्मों का स्वर्णिम काल।

'बहुराणी' और चन्द्रावल के लेखन साहित्यकार देवी शंकर प्रभाकर ही थे। यह भी एक प्रमाणिक तथ्य है अपनी प्रथम फिल्म 'बहुराणी' को उसे प्रथम हरियाणवी फिल्म का दर्जा दिलाने की कोशिश की थी।असफल निर्देशन के कारण यह बाक्य आफिस पर भारी भीड़ नहीं जुटा सकी 'प्रभाकर फिल्मय की गरीबी दृष्टिगत होते हुए भी जे0 पी0 कौशिक के दिलकश संगीत व कमजारियों पर पर्दा डाल दिया। गाडी लोंहरों की पृष्ठभूमि पर बनी इस फिल्म में ऊषा शर्मा के अभिनय को भी दर्शकों ने स्वीकार किया हीर राझां सोहनी महीवाल या लैला मजनु से मिलती जुलती इस प्रेम कहानी ने नई ब्रेक रचना को जन्म दिया।

हरियाणवी बोली व संस्कृति को अपने सरल लहजे में आकाशवाणी व दुरदर्शन तक पहुँचाने वाले दादा लहरी सिंह को भी प्रथम हरियाणवी फिल्म में अवसर दिया गया। सकलता के बाद ए0 बी0 प्रोडक्शन 'छैल गैल्या जांगी' बनी इसके निर्माता, निर्देशक व गीतकार भाल सिंह बल्हारा थे। इसके बाद 1984 में रोहतक से 'लीलो चमन' बनी इस फिल्म की नायिका शांति चतुर्वेदी, संगीत शर्मा, जे0वी0 सम्राट का अभिनय सराहनीय रहा। इसके बाद हरियाणवी सिनेमा ने फिल्मों की झड़ी सी लग गई इनमें मुख्यतः 'लाडो बंसती' 'पनघट' प्रेमी रामफल' भवर चमेली', 'बटेऊ', 'चन्द्र किरण', 'म्हारा पिहर ही कुछ चल सकी। वर्ष 1987 में 'धन पराया' 'फागण आयारे' 'छोरा जाट का' तथा झनकदार कंगना आदि फिल्मे प्रदर्शित हुई।

इसके बाद 'चन्द्रों' 'बैरी' 'श्योना' 'लम्बरदार' और छोरी सपेली की प्रदर्शित हुई। वर्ष 1991 में प्रदर्शित फिल्म 'जर जोरू और जमीन' ने सिनेमा को नई उर्जा दी। रविन्द्र के संगीत और अच्छी तकनीक ने दर्शकों पर अपन प्रभाव छोडा। 1992 में 'यारी', ये माटी हरियाणे की तथा 'घुघंट की फटकार' प्रदर्शित हुई हरियाणवी फिल्मों से प्रभावित होकर पंजाबी गायक गुरदास मान ने भी 'छोरा हरियाणे' का बनाई। इसी कडी में अभिनेता सुभाष जैन ने फिल्म 'छन्नो' का निर्माण किया।

चन्द्रावल फिल्म के नायक जगत जाखड ने भी निर्माता बनने की सोची और फिल्म 'मुकलावा' का निर्माण कर डाला। 1991 से हरियाणवी रंगमच से जुडे कलाकारों को लेकर 'खानदानी सरपंच बनाई गई। इसके नायक रामफलचहल थे। वर्ष 1992 में प्रदर्शित 'पिगंला भरथरी' ने भी दर्शकों को उम्मीद जगाई। बाद में देवी शंकर प्रभाकर ने 'जाटणी' का निर्माण किया। तमनीक, निर्देशन व संगीत की दृष्टि से एक बडे बजट की फिल्म 'बैरी' का भी निर्माण हुआ और स्वर्ण सिंह मोर द्वारा बनाई गई फिल्म 'जाट' का भी प्रर्दशन हुआ। लेकिन धीर–धीरे हरियाणवी सिनेमा दम तोडता नजर आया। काफी अन्तराल के बाद अश्वनी चौधरी के निर्देशन में व हरविन्द्र मलिक व कुमुद चौधरी के प्रोडक्शन में फिल्म 'लाडो' आई यह फिल्म बडे बजट की सिनेमा सकोप फिल्म थी। इस फिल्म में उदित नारायण और अल्का याज्ञनिक द्वारा गीत गांए गये फिल्म 'लाडों' को क्षेत्रीय भाषा में होने के कारण राष्ट्रीय अवार्ड मिला।

धीरे–धीरे हरियाणवी सिनेमा में एक आद फिल्में वर्ष भर में बई लेकिन समय की माँग के अनुरूप वो फिल्मे ज्यादा नहीं चल पाई। और हरियाणवी सिनेमा वो जलवा नहीं रख पाया।

हरियाणवी सिनेमा की वर्तमान स्थिति :–

समाज में बहुत सारी कलाएं जन्म लेती है और समाज को प्रभावित करती है। हरियाणवी सिनेमा भी हरियाणा प्रदेश के साथ–साथ वॉलीवुड़ में अपनी पहचान बनाने में तथा भारतीय समाज के मानस पटल पर अपना

प्रभाव छोडने में काफी हद तक सफल हुआ है। 80 के दशक से अपनी मजबुत यात्रा प्रारम्भ करके हरियाणवी सिनेमा ने देश दुनिया में ख्याति अर्जित की है। वर्तमान में जहाँ एक और मुम्बई में बैठे फिल्म निर्माताओं पर जहाँ हरियाणवी बोली का जादू सवार है वही हरियाणा में ऐसे फिल्म निर्माता और पटकथा और अच्छी कहानी वाली फिल्मों का अभाव सा लगता है। दुसरा कारण यह है कि सरकार द्वारा हरियाणवी सिनेमा को सहायता व ज्यादा टैक्स होने की वजह से हरियाणवी सिनेमा दम तोडता नजर आ रहा है। दर्शकों को अपनी और आर्कषित करने के लिए हरियाणवी संस्कृति से ओतप्रोत और अच्छी कहानी वाली फिल्मों का निर्माण करना होगा। तभी हरियाणवी सिनेमा प्रदेश में अपनी खोई पहचान पुनः स्थापित कर पायेगा।

निर्ष्कषः–

प्रस्तुत शोध पत्र में हरियाणवी सिनेमा के इतिहास एवं उसकी वर्तमान स्थिति को लेकर शोध किया गया। तो यह सामने आया कि हरियाणवी सिनेमा के इतिहास में बहुत उतार–चढाव आये लेकिन हरियाणवी सिनेमा ने इन सब को सज्ञयान में लेते हुए देश व दुनिया में अपनी पहचान बनाई है। इसके साथ–साथ जहाँ प्रदेश कि बोली को वॉलीवुड में महत्वपूर्ण स्थान दिलाया वहीं परदे पर हरियाणवी संस्कृति की वह झलक प्रस्तुत की जो सालो साल तक दर्शकों व हरियाणवी प्रेमियों के मन मस्तिष्क पर अपना जादू बरकरार रखेगी।

संदर्भ ग्रथ सूची

1. गुप्ता ओमः(2002) मीडिया साहित्य और संस्कृति कनिष्का पब्लिशर्स दिल्ली।
2. पाण्डेय गणेश : (2009)शोध प्रविधि राधा पब्लिकेशन दिल्ली।
3. मथना रघुबीर सिंह : (2004) हरियाणवी साहित्य का इतिहास, साहित्य प्रकाशन आगरा।
4. प्रभाकर देवी शंकर (1983) हरियाणा एक संस्कृतिक अध्ययन, उमेश प्रकाशन।
5. श्रीवास्तव : डी. एन. अनुसंधान विधिया, साहित्य प्रकाशन आगरा।

www.wikipedia.com
www.setindia.com
www.entertainmentoneindia.in
www.boldsky.com
www.yahoo.com